सोलापूर विद्यापीठ, सोलापूर

एम. ए. द्वितीय वर्ष (हिंदी)
अनिवार्य बीज पत्र - 5
आधुनिक हिंदी काव्य

अध्यापन : 2014-15, 2015-16, 2016-17

परीक्षाएँ : 2014-15, 2015-16, 2016-17

आधुनिक हिंदी काव्य पुनर्नवा के रुप में नवीन भावभूमि गतिशीलता को लेकर अवतरित हुआ। आधुनिकता, विश्वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसकी प्रमुख विशेषताएँ है। उन्नीसवीं शती के उत्तराध्र्द से अद्यावधि तक की संवेदनाएँ, भावनाएँ एवं नूतन विचार सरणियाँ इसमें अभिव्यक्ति हुई है। मनुष्य इसमें अभिव्यंजित हुआ है। विविध धाराओं में प्रमाण आधुनिक हिंदी काव्य प्रेरणा और उर्जा का अजस्त्र स्त्रोत है। अंतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है।

पाठ्यविषय

तृतीय सत्र (Semester III)

1) मैथिलीशरण गुप्त - साकेत (संदर्भ के लिए केवल नवम् सर्ग) ।
2) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'- राम की शक्तिपूजा, सरोज स्मृति, कुकुरमुत्ता।
3) सुमित्रानंदन पंत - परिवर्तन, मानव, एकतारा, ग्राम स्त्री

प्रश्नपत्र का स्वरुप एवम् अंक विभाजन

प्रश्न- 1	बहुविकल्पी दस प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
प्रश्न 2	लघुत्तरी प्रश्न (6 में से 5) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	10
प्रश्न 3	ससंदर्भ व्याख्या (3 में से 2) (केवल साकेत के नवम् सर्ग पर)	10
प्रश्न 4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (निराला और पंत पर एक - एक प्रश्न)	10
प्रश्न- 5	दीर्घोत्तरी प्रश्न 'साकेत' पर	10

चतुर्थ सत्र (Semester - IV)

1) रामधारी सिंह 'दिनकर' - कुरुक्षेत्र ।

2) सच्चिदानंद हिरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' - नदी के द्वीप, असाध्य वीणा, बावरा अहेरी।

3) अनामिका - बेजगह, आम्रपाली, राधा की बेटियाँ, दलाई लामा।

प्रश्नपत्र का स्वरुप एवम् अंक विभाजन

प्रश्न- 1	बहुविकल्पी दस प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 2	लघुत्तरी प्रश्न (6 में से 5) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 3	ससंदर्भ व्याख्या। (3 में से 2) (केवल कुरुक्षेत्र पर)	-	10
प्रश्न 4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (अज्ञेय और अनामिका पर एक - एक प्रश्न)	-	10
प्रश्न- 5	दीर्घोत्तरी प्रश्न ' कुरुक्षेत्र ' पर	-	10

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नई कविता के प्रतिमान - लक्ष्मीकांत वर्मा (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
2. कविता की वैचारिक भूमिका - नरेंद्र मोहन (दिशा प्रकाशन, दिल्ली.)
3. समकालीन चर्चित कविता - डॉ. हुकुमचंद राजपाल (शारदा प्रकाशन, दिल्ली.)
4. भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य आयाम - शंभुनाथ (वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.)
5. नई कविता का आत्मसंघर्ष - ग. मा. मुक्तिबोध (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.)
6. नई कविता और अस्तित्ववाद - रामविलास शर्मा (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.)
7. अधुनिक कवि निराला - डॉ. रघुवंश (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
8. निराला काव्य और व्यक्तित्व - प्रो. धनंजय वर्मा (विद्या प्रकाशन मंदिर, दिल्ली)
9. काव्य देवता निराला - विश्वभंर 'मानव ' (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
10. निराला काव्य समीक्षा - पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश ' (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
11. निराला की काव्य साधना - वीणा शर्मा (हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली)
12. क्रांतिकारी कवि निराला - बच्चन सिंह (नंदकिशोर एण्ड सन्स, वाराणसी)

सोलापुर विश्वविद्यालय,सोलापुर
एम. ए. द्वितीय वर्ष (हिंदी)
अनिवार्य बीज पत्र - 6
काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

अध्यापन : 2014-15, 2015-16, 2016-17

परीक्षाएँ : 2014-15, 2015-16, 2016-17

प्रस्तावना

किसी रचना के भाव, विचार एवं मूल्य उद्‌घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अपरिहार्य है। काव्यशास्त्र के अध्ययन से एक ऐसी दृष्टि विकसित होती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म एवं मूल्य को परखा जा सकता है। सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने और जॉचने-परखने के लोए भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का अध्ययन समीचिन है।

पाठ्‌यक्रम

तृतीय सत्र (Semester III)

क) संस्कृत काव्यशास्त्र

1) भारतीय काव्यशास्त्र के विकासक्रम का संक्षिप्त परिचय।

2) रस सिद्‌धांत :

- रस शब्द का अर्थ एवं स्वरुप
- भरतमुनि का रससूत्र एवं तत्‌संबंधी भट्टलोल्लट, शंकुक, भट्टनायक और अभिनव गुप्त इन आचार्यों के मत।
- साधारणीकरण की अवधारणा और उसके संबंध में विविध मतों का विवेचन।

3) अलंकार सिद्धांत -

- अलंकार की परिभाषा एवं स्वरुप।
- अलंकार संप्रदाय का विकास।
- काव्य में अलंकारों का स्थान।

4) रीति-सिद्धांत -

- रीति शब्द का अर्थ एवं परिभाषा।
- रीति के भेद और उसके आधार।
- रीति और गुण।
- रीति और शैली।

5) वक्रोक्ति सिद्धांत -

- वक्रोक्ति की परिभाषा एवं स्वरुप।
- कुंतकपूर्व वक्रोक्ति-विचार।
- वक्रोक्ति के प्रमुख भेद।

6) ध्वनि सिद्धांत -

- ध्वनि की परिभाषा एवं स्वरुप।
- ध्वनि और शब्दशक्ति।
- ध्वनि के भेद -

1. अभिधामूला ध्वनि - अ. संलक्षक्रम व्यंग्य ध्वनि
   आ. असंलक्षक्रम व्यंग्य ध्वनि

2 लक्षणामूला ध्वनि - अ. अर्थांतर संक्रमित वाच्य ध्वनि
   आ. अत्यंत तिरस्कृत वाच्य ध्वनि

7) औचित्य सिद्धांत -

- औचित्य की परिभाषा एवं स्वरुप।
- आचार्य क्षेमेंद्र पूर्व औचित्य विचार।
- औचित्य के प्रमुख्र भेद।

<u>प्रश्नपत्र का स्वरुप एवम् अंक विभाजन</u>

प्रश्न 1	बहुविकल्पी दस प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 2	लघुत्तरी प्रश्न (6 में से 5) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 3	टिप्पणियाँ लिखिए । (3 में से 2) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न- 5	दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10

चतुर्थ सत्र (Semester - IV)

ख) पाश्चात्य काव्यशास्त्र

1) पाश्चात्य काव्यशास्त्र के इतिहास का संक्षिप्त परिचय।

2) **अनुकरण सिद्धांत -**

- अनुकरण सिध्दांत का स्वरुप।
- प्लेटो और अरस्तू के अनुकरण विषयक विचारों की तुलना।

3) **उदात्त सिद्धांत -**

- उदात्त का अर्थ एवं स्वरुप।
- उदात्त के तत्व- अंतरंग एवं बहिरंग तत्व।
- उदात्त के विरोधी तत्व।

4) **कल्पना सिद्धांत -**

- कल्पना सिद्धांत की भूमिका। काव्य कला की उत्पत्ति, कल्पना शब्द का अर्थ।
- कल्पना के भेद - मुख्य और गौण कल्पना।
- कल्पना और रम्य कल्पना में अंतर।

5) **अभिव्यंजनावाद -**

- क्रोंचे की कला विषयक धारणा।
- अंतःप्रज्ञा और अभिव्यंजना का नित्य संबंध।
- अभिव्यंजना और कला का संबंध।
- क्रोंचे के अनुसार कला निष्पति की प्रक्रिया ।

6) निर्वैयक्तिकता सिध्दांत और वस्तुनिष्ठ प्रतिरुपता सिद्धांत -

- इलियट की निर्वैयक्तिकता की धारणा, परिवर्तित धारणा।
- व्यक्तिगत भावों का सामान्यीकरण।
- वस्तुनिष्ठ प्रतिरुपता सिद्धांत का स्वरुप।

7) मनोवैज्ञानिक मूल्यवाद एवं संप्रेषण सिध्दांत -

- काव्य मूल्यों की मनोवैज्ञानिक व्याख्या।
- मनोवेगों के दो प्रकार, मनोवेगों में संतुलन।
- संप्रेषण का स्वरुप और महत्व।

8) उत्तर अधुनिकता वाद : सिद्धांत और स्वरुप विवेचन

ग) हिंदी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियॉ

1. प्रभावात्मक आलोचना (आत्मप्रधान आलोचना)
2. शास्त्रीय आलोचना
3. ऐतिहासिक आलोचना
4. मनोवैज्ञानिक आलोचना
5. प्रगतिवादी आलोचना
6. स्त्रीवादी अलोचना
7. अंबेडकरवादी अलोचना

<u>प्रश्नपत्र का स्वरुप एवम् अंक विभाजन</u>

प्रश्न 1	बहुविकल्पी दस प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 2	लघुत्तरी प्रश्न (6 में से 5) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 3	टिप्पणियाँ लिखिए । (3 में से 2) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 5	दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय साहित्यशास्त्र, खंड 1,2 - आचार्य बलदेव उपाध्याय
2. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका - डॉ. नगेंद्र
3. साहित्य के प्रमुख सिध्दांत - डॉ. राममुर्ति त्रिपाठी
4. भारतीय काव्यशास्त्र - डॉ. सत्यदेव चौधरी
5. काव्यशास्त्र - डॉ. भगिरथ मिश्र
6. भारतीय काव्यशास्त्र के सिध्दांत - डॉ. कृष्णदेव झारी
7. शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत, भाग 1 एवं 2 - डॉ. गोविंद त्रिगुणायन
8. रस सिध्दांतः स्वरुप विश्लेषण - डॉ आनंदप्रकाश दिक्षित
9. समीक्षालोक - डॉ. भगीरथ दिक्षित
10. पाश्चात्य काव्यशास्त्र - डॉ. भगीरथ मिश्र
11. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दांत - डॉ. कृष्णदेव शर्मा
12. पाश्चात्य साहित्य चिंतनः विकासक्रम - डॉ. निर्मला जैन, बांठिया
13. नई समीक्षा के प्रतिमान - निर्मला जैन
14. आधुनिक आलोचना के बीज शब्द - बच्चन सिंह
15. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दांत - शांतिस्वरुप गुप्त
16. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दांत - मैथिलीप्रसाद भारद्वाज
17. भारतीय काव्यशास्त्रः सिध्दांत और समस्याएँ- सुधांशुकुमार शुक्ल
18. काव्यशास्त्र - डॉ. बालेन्दुशेखर तिवारी
19. पाश्चात्य काव्यशास्त्र - देवेंद्रनाथ शर्मा
20. आधुनिक समीक्षा - डॉ. भगवत स्वरुप मिश्र
21. आलोचना के बदलते मानदंड और हिंदी साहित्य - डॉ. शिवचरण सिंह
22. अब्राह्मणी साहित्याचे सौंदर्यशास्त्र - शरद पाटील
23. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र - ओमप्रकाश वाल्मिकी
24. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र - रमणिका गुप्ता

एम. ए. द्वितीय वर्ष (हिंदी)

अनिवार्य बीज पत्र - 7

हिंदी साहित्य का इतिहास

अध्यापन : 2014-15, 2015-16, 2016-17

परीक्षाएँ : 2014-15, 2015-16, 2016-17

प्रस्तावना

किसी भी देश के जनमानस की मनोवृत्ति, दशा एवं संवेदना के विविध स्वरुपों का संचित रुप वहाँ के साहित्य में परिलक्षित होता है। सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न परिस्थितियों के कारण चित्तवृत्तियों में परिवर्तन होता है, फलतः साहित्यिक रुपों में भी बदलाव आ जाता है। इस बदली हुई विकास प्रक्रिया को साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही देखा और परखा जा सकता है। आठवीं-नवीं शताब्दी से लेकर आज तक के विकास परिदृश्य के साथ साहित्यिक सृजनशीलता के विविध रुपों, प्रवृत्तियों और भाषा-शैलियों का ज्ञान हिंदी साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही किया जा सकता है। अतः इसका अध्ययन सर्वथा सार्थक एवं समीचीन है।

पाठ्यक्रम

तृतीय सत्र (Semester III)

हिंदी साहित्य का इतिहास

(क) **1.** हिंदी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन

काल-विभाजन के आधार - भाषा, साहित्य, प्रथम साहित्यकार, भाषा क्षेत्र।

आदिकाल

1. आदिकाल का दार्शनिक परिवेश - वैदिक दर्शन, चार्वाक दर्शन, बौध्द दर्शन, जैन दर्शन।
2. रासो काव्य परंपरा ।

3. नाथ साहित्य परंपरा।

4. सिध्द साहित्य परंपरा।

5. अमीर खुसरो और विद्यापति का साहित्यिक परिचय ।

(ख) पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)

1. निर्गुण भक्ति साहित्य और उसकी शाखाएँ

अ) ज्ञानाश्रयी शाखा- ज्ञानाश्रयी शाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि कवि कबीरदास का साहित्यिक परिचय।

आ) प्रेमाश्रयी शाखा- प्रेमाश्रयी शाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि कवि मलिक मुहम्मद जायसी का साहित्यिक परिचय।

2. सगुण भक्ति साहित्य और उसकी शाखाएँ

इ) रामभक्ति शाखा- रामभक्ति शाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि कवि तुलसीदास का साहित्यिक परिचय।

ई) कृष्णभक्ति शाखा- कृष्णभक्ति शाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि कवि सूरदास का साहित्यिक परिचय।

3. भक्तिकालीन कवियों का सामान्य परिचय- मीराबाई, नंददास, रैदास।

प्रश्नपत्र का स्वरुप एवम् अंक विभाजन

प्रश्न 1	बहुविकल्पी दस प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 2	लघुत्तरी प्रश्न (6 में से 5) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 3	टिप्पणियाँ लिखिए । (3 में से 2) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 5	दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10

चतुर्थ सत्र (Semester - IV)

(ग) उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल)

1. रीतिकालीन साहित्य - रीतिबध्द, रीतिसिध्द तथा रीतिमुक्त साहित्य की विषय वस्तु और शैलीगत प्रवृत्तियाँ ।

2. रीतिकाल का शृंगारेत्तर साहित्य - भक्ति साहित्य, नीति साहित्य और वीर साहित्य।

5. रीतिकालीन प्रमुख कवियों का परिचय - केशवदास, रहीम, रसखान, घनानंद, बिहारी, भूषण।

(घ) आधुनिक काल

1. आधुनिककाल का दार्शनिक परिवेश - गांधीवाद, फुले - अंबेडकर वाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद।

2. भारतेंदुपूर्व काल का हिंदी गद्य साहित्य - प्रमुख गद्य रचनाकार, फोर्ट विल्यम कॉलेज, ईसाई मिशनरी, आर्य समाज, ब्राह्मो समाज आदि।

3. द्विवेदीयुगीन हिंदी गद्य साहित्य - साहित्य विषयक मान्यता, राष्ट्रीय भावना, सुधारवादी दृष्टि, भाषा सुधार।

हिंदी गद्य विधाओं के विकास का सामान्य परिचय

1. हिंदी उपन्यास उद्‌भव और विकासः प्रेमचंदपूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग।

2. हिंदी कहानी उद्‌भव और विकासः प्रेमचंदपूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, नई कहानी, साठोत्तरी कहानी - समसामयिक कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी।

3. हिंदी नाटक का उद्‌भव और विकासः भारतेंदुपूर्व युग, भारतेंदु युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग।

4. हिंदी निबंध का इतिहासः भारतेंदु युग, द्विवेदीयुग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग।

5. हिंदी गद्य की रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज आदि विधाओं का उद्‌भव और विकास।

आधुनिक हिंदी पद्य (काव्य) का विकास

1. भारतेंदुयुगीन कविताः सामान्य प्रवृत्तियाँ।
2. द्विवेदीयुगीन कविताः सामान्य प्रवृत्तियाँ।
3. छायावादी कविताः सामान्य प्रवृत्तियाँ।
4. प्रगतिवादी कविताः सामान्य प्रवृत्तियाँ।
5. प्रयोगवादी कविताः सामान्य प्रवृत्तियाँ।
6. नई कविताः सामान्य प्रवृत्तियाँ।
7. साठोत्तरी कविताः सामान्य प्रवृत्तियाँ।
8. बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों का हिंदी साहित्य - स्त्री विमर्श, दलित विमर्श- मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा सोबती, चित्रा मुगदल, मोहनदास नेमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मिकी।

<u>प्रश्नपत्र का स्वरुप एवम् अंक विभाजन</u>

प्रश्न 1	बहुविकल्पी दस प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 2	लघुत्तरी प्रश्न (6 में से 5) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 3	टिप्पणियाँ लिखिए । (3 में से 2) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 5	दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास - संपादक, डॉ. नगेंद्र
3. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
4. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
5. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह
6. हिंदी साहित्य और उसकी प्रवृत्तियाँ - डॉ. गोविंदराम शर्मा
7. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ - डॉ. जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल
8. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास - बाबू गुलाबराय
9. हिंदी साहित्य की भूमिका - डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
10. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. रामकुमार वर्मा
11. हिंदी गद्य का उद्‌भव और विकास - डॉ. उमेश शास्त्री
12. हिंदी साहित्यः एक परिचय - डॉ. त्रिभुवन सिंह
13. हिंदी साहित्य और संवेदना का इतिहास - डॉ. रामस्वरुप चतुर्वेदी
14. हिंदी रीति साहित्य - डॉ. भगिरथ मिश्र
15. रीति काव्य की भूमिका - डॉ. नगेंद्र
16. हिंदी रीतिकालीन काव्य पर संस्कृत काव्य का प्रभाव - डॉ. दयानंद शर्मा
17. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
18. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य - रामरतन भटनागर
19. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक - डॉ. रिता कुमार
20. हिंदी साहित्यः युग और प्रवृत्तियॉं - डॉ. शिवकुमार शर्मा
21. हिंदी उपन्यासः एक अंतर्यात्रा - डॉ. रामदरश मिश्र
22. हिंदी साहित्य की नवीन विधाएँ - डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
23. हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकार - डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

24. नये प्रतिनिधि कवि - डॉ. हरिचरण शर्मा

25. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ माधव सोनटक्के

26. हिंदी साहित्य का सही इतिहास - डॉ चंद्रभानू सोनवने

27. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श - डॉ. जगदीश चतुर्वेदी

28. दलित मुक्ति का प्रश्न और दलित साहित्य - श्री. दिनेश राम

29. इक्कीसवी सदी में दलित विमर्श - डॉ. जयप्रकाश कर्दम

30. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे

31. उत्तरशती चिंतन विधियाँ - डॉ सुरेश माहेश्वरी

32. अंतिम दो दशकों का हिंदी साहित्य - प्रधान संपादक, मीरा गौतम

सोलापूर विश्वविद्यालय, सोलापुर
एम. ए. द्वितीय वर्ष (हिंदी)
वैकल्पिक प्रश्नपत्र-8
साहित्यिक वर्ग-ग : भारतीय साहित्य

अध्यापन : 2014-15, 2015-16, 2016-17
परीक्षाएँ : 2014-15, 2015-16, 2016-17

प्रस्तावना

भारतीय भाषाओं में हिंदी भाषा और साहित्य का स्थान अन्य प्रांतीय भाषाओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है, इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिकाधिक गंभीर तथा प्रशस्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। एक समेकिन भारतीय साहित्य की रुपरचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से हिंदी के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। तभी उनके ज्ञान-क्षितिज एवं सांस्कृतिक दृष्टि का विकास होगा। यही नहीं, इससे हिंदी अध्ययन का अंतरंग विस्तार भी होगा।

पाठ्यविषय -

तृतीय सत्र (Semester III)

(अ) भारतीय साहित्य की अवधारणा

1. भारतीय साहित्य का स्वरुप
2. भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ
3. भारतीय साहित्य में आज के भारत का प्रतिबिम्ब
4. हिंदी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति
5. दक्खिनी हिंदी साहित्यः उद्भव और विकास, दक्खिनी हिंदी के रचनाकार - ख्वाजा बंदनवाज, वली औरंगाबादी, सीराज औरंगाबादी, सुलेमान खतीब।

आ) **रचनाएँ -**

1. नाटक (कन्नड) हयवदन - गिरीश कर्नाड - राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

प्रश्नपत्र का स्वरुप एवम् अंक विभाजन

प्रश्न 1	बहुविकल्पी दस प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 2	लघुत्तरी प्रश्न (6 में से 5) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 3	टिप्पणियाँ लिखिए । (3 में से 2) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 5	दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10

चतुर्थ सत्र (Semester - IV)

रचनाएँ-

1. उपन्यास (बंगला) अग्निगर्भ - महाश्वेतादेवी - राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2. कहानी (तमिल) अधूरे मनुष्य - डी. जे. कांतन ज्ञानपीठ प्रकाशन

प्रश्नपत्र का स्वरुप एवम् अंक विभाजन

प्रश्न 1	बहुविकल्पी दस प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 2	लघुत्तरी प्रश्न (6 में से 5) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 3	टिप्पणियाँ लिखिए । (3 में से 2) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 5	दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय साहित्य की भूमिका - रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.

2. कट्टरता जीतेगी या उदारता - प्रेमसिंह, राजकमल प्रकाशन

3. प्राचीन भारतीय साहित्य मीमांसा - अशोक केलकर, राजकमल प्रकाशन

सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर
एम. ए. द्वितीय वर्ष (हिंदी)
वैकल्पिक प्रश्नपत्र - 8
साहित्यिक वर्ग - क : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

अध्यापन : 2014-15, 2015-16, 2016-17

परीक्षाएँ : 2014-15, 2015-16, 2016-17

उद्देश :

1. हिंदी का आदिकालीन, भक्तिकालीन तथा रीतिकालीन काव्य प्रवृत्तियों की जानकारी देना ।
2. तत्कालीन कुछ प्रमुख कवियों की कुछ कृतियों के प्रत्यक्ष अध्ययन द्वारा उक्त काव्य से साक्षात्कार कराना ।
3. पाठ्य कवियों की कृतियों के आधार पर समीक्षण की क्षमता बढाना ।

तृतीय सत्र (Semester III)

पाठ्यक्र में निर्धारित कवि :

विद्यापति : संपादक : डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित, **प्रकाशक :** दिव्या प्रकाशन, पाटनकर बाजार, ग्वालियर - 474 001 ।

पद क्रमांक : 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 13, 20, 21, 25, 26, 52, 54, 58, 59, 61, 62, 64, 68, 72, 75, 77 = 25

अध्ययनार्थ विषय :

विद्यापति : संयोग श्रृंगार, वियोग श्रृंगार, भक्तिभावना, विद्यापति : भक्त कवि या श्रृंगारी कवि, विद्यापति के काव्य में सौंदर्य चित्रण, प्रकृति चित्रण, विद्यापति के काव्य में गीति पध्दति, काव्य कला , विद्यापति के काव्य की देन, विद्यापति के काव्य में कलंकार योजना, विद्यापति की भाषा ।

1. **पद्मावत : मलिक मुहम्मद जायसी, संपादक :** वासुदेव शरण अग्रवाल, **प्रकाशक:** साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी ।

   अध्ययनार्थ खंड : सिंहलद्विप खंड, मानसरोवर खंड, नागमती बियोग खंड।

   अध्ययनार्थ विषय : इतिहास और कल्पना, प्रेमभाव, सौंदर्य वर्णन, श्रृंगार वर्णन, रहस्यभावना, प्रकृति चित्रण, चरित्र चित्रण, महाकाव्यत्व, सूफी दर्शन, जायसी की काव्य कला, हिंदी साहित्य में जायसी का स्थान ।

2. **कबीर : संपादक :** हजारी प्रसाद द्विवेदी, **प्रकाशक :** राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली - 110002 ,

   अध्ययनार्थ दोहे क्रमांक - 160 ते 209

   अध्ययनार्थ विषय : कबीर की रहस्यानुभुति और प्रेम, कबीर की दार्शनिक विचार धारा, कबीर की भाषा, हिंदी साहित्य में कबीर का स्थान, कबीर काव्य की प्रासंगिकता, कबीर के निर्गुण राम का स्वरुप, कबीर का विद्रोह, कबीर का कवित्व, कबीर काव्य में समन्वय ।

प्रश्नपत्र का स्वरुप एवम् अंक विभाजन

प्रश्न 1	बहुविकल्पी दस प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 2	लघुत्तरी प्रश्न (6 में से 5) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 3	टिप्पणियाँ लिखिए । (3 में से 2) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 5	दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10

चतुर्थ सत्र (Semester - IV)

1) **सूरदास : भ्रमरगीत सार : संपादक :** आचार्य रामचंद्र शुक्ल और पंडीत विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद - 1

   अध्ययनार्थ पद : 21 ते 70

   अध्ययनार्थ विषय : भ्रमरगीत की दार्शनिक पृष्ठभूमि, सूर काव्य में योग बनाम भक्ति, सूर काव्य में वियोग वर्णन, भ्रमरगीत : एक उपालंभ काव्य, सूर की गोपीयाँ और सूर के उध्दव, सूर की काव्य कला, सूर की भाषा, भ्रमरगीत में व्यंजना ।

2) **बिहारी प्रकाश :** संपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, **प्रकाशक :** लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद - 1

   अध्ययन के लिए सभी दोहे

   अध्यनार्थ विषय : संयोग श्रृंगार, वियोग श्रृंगार, प्रसंगोद्‌भावना, सौंदर्य चित्रण, सतसई परंपरा, बिहारी की अनुभव योजना , काव्य सौंदर्य, हिंदी साहित्य में बिहारी का स्थान ।

3. **भूषण : संपादक :** डॉ. भगवानदास तिवारी, **प्रकाशक :** साहित्य भवन प्रा. लि., 93 जीरो रोड, इलाहाबाद - 211003

   अध्ययन के लिए छंद : 17, 20, 23, 26, 27, 28, 30, 33, 35, 41, 43, 47, 49, 61, 63, 68, 72, 79, 91, 95 = कुल 20

   अध्ययनार्थ विषय : युगचेतना और भूषण, भूषण काव्य में शिवचरित्र और छत्रसाल वर्णन, भूषण काव्य में रस, भूषण काव्य में अलंकार और छंद, भूषण की काव्य कला, भाषा शैली भूषण काव्य में राष्ट्रीयता, भूषण का काव्य में स्थान ।

प्रश्नपत्र का स्वरुप एवम् अंक विभाजन

प्रश्न 1	बहुविकल्पी दस प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 2	लघुत्तरी प्रश्न (6 में से 5) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 3	टिप्पणियाँ लिखिए । (3 में से 2) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 5	दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10

संदर्भ ग्रंथ

1. विद्यापति की काव्य प्रतिभा - गोविंदराव शर्मा
2. विद्यापति : युग और साहित्य - डॉ. अरविंद नारायण सिन्हा
3. विद्यापति : आलोचना और संग्रह - आनंदप्रकाश दीक्षित
4. विद्यापति और उनका काव्य - डॉ. शुभकार कपूर
5. विद्यापति - डॉ शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. जायसी के पद्मावत का मूल्यांकन --प्रो. हरेंद्र प्रताप सिंहा, साहित्य भवन, इलाहाबाद
7. महाकवि जायसी और उनका काव्य - डॉ. इकबाल अहमद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य - डॉ. शिवसहाय पाठक, साहित्य भवन, इलाहाबाद
9. जायसी का पद्मावत - काव्य और दर्शन - डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
10. पद्मावत में काव्य, संस्कृति और दर्शन - डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
11. पद्मावत का काव्य सौंदर्य - डॉ. चंद्रबली पांडेय
12. कबीर एक अनुशीलन - डॉ. रामकुमार वर्मा
13. कबीर का रहस्यवाद - डॉ. रामकुमार वर्मा
14. कबीर की विचार धारा - डॉ. गोविंद त्रिगुणायत

15. कबीर ग्रंथवली - संपादक : डॉ. माताप्रसाद गुप्त, साहित्य भवन, इलाहाबाद

16. कबीर साहित्य की परख्र - आ. परशुराम चतुर्वेदी

17. कबीर मीमांसा - डॉ. रामचंद्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

18. कबीर वचनामृत - डॉ. विद्यानिवास मिश्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ऱ्2

19. कबीर साधना और साहित्य - डॉ. प्रतापसिंह चौहाण

20. निर्गुण काव्यधारा और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि - डॉ. गोविंद त्रिगुणायत

21. युग पुरुष कबीर - डॉ. रामचंद्र वर्मा

22. कबीर - संपादक - विजयेंद्र स्नातक

23. सूरदास और उनका साहित्य - डॉ. मुंशीराम शर्मा

24. भारतीय साधना और सूर साहित्य - डॉ. हरवंशलाल शर्मा

25. सूर की काव्य कला - डॉ. मनमोहन गौतम

26. सूर -साहित्य - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

27. सूर की भाषा - डॉ. प्रेमनारायण टंडन

28. कृष्णकाव्य और सूर : सांस्कृतिक संदर्भ - डॉ. प्रेमशंकर

29. सूरदास - आ. रामचंद्र शुक्ल

30. सूरदास एक पुनरावलोकन - डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, निराली प्रकाशन, पुणे

31. महाकवि सूरदास - आ. नंददुलारे वाजपेयी

32. सूरसाहित्य का छंद शास्त्रीय अध्ययन - डॉ. गौरीशंकर मिश्र

33. भ्रमरगीत का काव्य सौंदर्य - डॉ. सतेंद्र पारीक

34. भ्रमरगीत : एक अन्वेषन - डॉ. सतेंद्र

35. सूर की गोपिका : एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन - डॉ. प्रभारानी भाटिया, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद

36. सूरदास - डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

37. बिहारी सतसई का तुलनात्मक अध्ययन - पं. पद्मसिंह शर्मा, ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
38. बिहारी और उनका साहित्य - डॉ. हरवंशलाल शर्मा, डॉ. परमानंद शास्त्री, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ
39. बिहारी काव्य का मुल्यांकन - डॉ. किशोरीलाल, साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद
40. भूषण - डॉ. भगवानदास तिवारी

सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर
एम. ए. द्वितीय वर्ष (हिंदी)
वैकल्पिक प्रश्नपत्र- 8
व्यावसायिक वर्ग
अनुवाद : सिद्धांत और प्रयोग

अध्यापन : 2014-15, 2015-16, 2016-17

परीक्षाएँ : 2014-15, 2015-16, 2016-17

प्रस्तावना :

सिमटते हुए विश्व में विविध देशी एवं विदेशी भाषाओं के ज्ञानभंडार की जानकारी के लिए अनुवाद की अनिवार्यता अटल है। तुलनात्मक साहित्य, भाषा विज्ञान तथा विदेशी भाषा शिक्षण आदि में भी अनुवाद एक कारगर उपकरण के रुप में प्राचीन काल से एक मान्य विधा के रुप में स्वीकृत रहा है। जनसंचार माध्यमों तथा दूसरे आधुनिक विषय क्षेत्रो में भी इसकी उपयोगिता सर्वविदित है। अत: अनुवाद का शिक्षण, पठन-पाठन आज की अनिवार्यता है।

पाठ्यविषय -

<u>तृतीय सत्र (Semester III)</u>

क) 1) अनुवाद का स्वरुप : अर्थ, परिभाषा, महत्त्व एवम् व्याप्ति, अनुवाद कला या विज्ञान ।

2) अनुवाद प्रक्रिया : मूलभाषा का पाठबोधन और व्याख्या, लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति । अनुवाद की प्रक्रियागत स्थितियॉं- अर्थयोग, अर्थहानि, अर्थांतरण, पुन:सर्जन।

3) अनुवाद का मौखिक तथा लिखित स्वरुप, महत्त्व एवं वर्तमान काल में उसकी उपयोगिता।

4) अनुवाद के प्रकार :

प्रकिया के आधार पर- शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, रुपांतरण ।

गद्य-पद्य के आधार पर- गद्यानुवाद, पद्यानुवाद ।

विधा के आधार पर- नाट्यानुवाद, काव्यानुवाद, कथानुवाद आदि।

5) हिंदी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका ।

6) अनुवाद तथा समतुल्यता का सिध्दांत।

ख) व्यावहारिक अनुवाद।

(मराठी और अंग्रेजी गद्य खंड का हिंदी में अनुवाद)

प्रश्नपत्र का स्वरुप एवम् अंक विभाजन

प्रश्न- 1	बहुविकल्पी दस प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 2	लघुत्तरी प्रश्न।(6 में से 5) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 3	'ख' विभाग पर मराठी और अंग्रेजी परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद (मराठी परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद 5 अंक और अंग्रेजी परिच्छेद का हिंदी में अनुवार 5 अंक)	-	10
प्रश्न 4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न- 5	दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10

चतुर्थ सत्र (Semester - IV)

1) अनुवाद के विविध क्षेत्र- कार्यालयी, तकनिकी, साहित्यिक, मानविकी, संचार माध्यम, विज्ञापन, वाणिज्य, वैज्ञानिक आदि।

2) अनुवाद की समस्याएँ- साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ, कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ, तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, बैंक संबंधी अनुवाद की समस्याएँ, विधि साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, कोश एवं पारिभाषिक शब्दार्थ के

निर्माण की समस्याएँ, मीडिया क्षेत्र के अनुवाद की समस्याएँ, विज्ञापन के अनुवाद की समस्याएँ, वैज्ञानिक क्षेत्र से संबंधित साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ आदि।

3) अनुवाद के उपकरण (साधन) : द्विभाषिक कोश, त्रिभाषिक कोश, पर्यायवाची कोश, वर्णनात्मक कोश, सूचियाँ, विषय विशेष के ग्रंथ, कम्प्यूटर। उक्त साधनों के उपयोग में सावधानी।
4) अनुवाद : पुनरीक्षण, संपादन, मूल्यांकन।
5) अनुवाद की सार्थकता, प्रासंगिकता, एवं व्यावसायिक परिदृश्य।
6) अनुवाद और लिप्यंतरण : आवश्यकता, समस्याएँ।
7) अनुवादक के गुण ।
8) मशीनी अनुवाद

घ) व्यावहारिक अनुवाद।

(मराठी और अंग्रेजी गद्य खंड का हिंदी में अनुवाद)

<u>प्रश्नपत्र का स्वरुप एवम् अंक विभाजन</u>

प्रश्न- 1	बहुविकल्पी दस प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 2	लघुत्तरी प्रश्न। (6 में से 5) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 3	'घ' विभाग पर मराठी और अंग्रेजी परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद (मराठी परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद 5 अंक और अंग्रेजी परिच्छेद का हिंदी में अनुवार 5 अंक)	-	10
प्रश्न 4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न- 5	दीर्घोत्तरी प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10

संदर्भ ग्रंथ

1. अनुवाद सिध्दांत की रुपरेखा- डॉ सुरेश कुमार
2. अुनवाद विज्ञान- डॉ भोलानाथ तिवारी
3. अनुवाद विज्ञान : सिध्दांत और अनुप्रयोग- संपा. डॉ. नगेंद्र
4. अनुवाद : सिध्दांत एवं प्रयोग- डॉ. जी. गोपीनाथन्
5. अनुवाद कला : सिध्दांत और प्रयोग- डॉ. कैलासचंद्र भाटिया
6. अनुवाद विज्ञान- डॉ. कैलासचंद्र भाटिया
7. अनुवाद के विविध आयाम- डॉ. पूरनमल टण्डन, सेठी
8. अनुवाद विज्ञान- डॉ बालेन्दुशेखर तिवारी
9. अनुवाद : विविध आयाम- डॉ चतुर्वेदी
10. अनुवाद भाषाएँ-समस्याएँ- डॉ एन.ई. विश्वनाथ अय्यर
11. अनुवाद सिध्दांत और समस्याएँ- डॉ रविंद्रनाथ श्रीवास्तव
12. अनुवाद क्या है ?- डॉ राजमल बोरा
13. अनुवाद सिध्दांत और संप्रेषण- डॉ हरिमोहन
14. अनुवाद प्रक्रिया- डॉ. रीतारानी पालीवाल
15. अनुवाद कला- डॉ. भोलानाथ तिवारी

सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर
एम. ए. द्वितीय वर्ष (हिंदी)
वैकल्पिक प्रश्नपत्र- 8
साहित्यिक वर्ग-ख
नाटक और रंगमंच

अध्यापन : 2014-15, 2015-16, 2016-17

परीक्षाएँ : 2014-15, 2015-16, 2016-17

प्रस्तावना :

नाटक साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है। यह श्रव्य एवं दृष्य दोनों रुपों को समेटे हुए है। नाटक प्रत्यक्ष, कल्पना एवं अध्यवसाय का विषय बन शल्प तथा कल्पना से समन्वित विलक्षण रुप धारण करके द्रष्टां एवं पाठक दोनों को मनोरंजन के साथ-साथ समाज निर्माण एवं परिवर्तन की चेतना प्रदान करते हुए अपने साध्य में दृष्य होने के कारण सीधे रंगमंच से जुडा हुआ है। जिसे विविध काव्य के अतिरिक्त ललित कलाएँ तथा कलाकार मिलकर आकार देते है। इसमें नाटककार अभिनेता, संगीत, दृश्य-विधान, वेशभूषाकार आदि सभी का रचनात्मक सहयोग होता है। जीवन की विसंगतियाँ, विद्रुपताओं,उसकी विशिष्ट ऐतिहासिक, चारित्रिक, सांस्कृतिक विशेषताओं की व्यापक समझदारी के इस सशक्त माध्यम का अध्ययन अनिवार्य है।

पाठ्यविषय -

<u>तृतीय सत्र (Semester III)</u>

अ) नाटक और रंगमंच का स्वरुप :

1) नाट्योत्पत्ति संबंधी विविध मत -
2) नाट्य अध्ययन का स्वरुप - नाटक की विधागत विशेषताएँ, नाटक और रंग मंच का अंत: संबंध, नाटक में दृश्य और श्रव्य तत्त्वों का समायोजन।

3) रंगमंच का अर्थ, प्रकार, रंगशिल्प, रंग संप्रेषण के विविध घटक (मूर्त-अमूर्त)

आ) नाट्यकृतियाँ :

1. हैलो कामरेड - मोहनदास नैमिशराय
2. सूर्य की अन्तिम किरण से पहली किरण तक - सुरेन्द्र वर्मा

प्रश्नपत्र का स्वरुप एवम् अंक विभाजन

प्रश्न- 1	बहुविकल्पी दस प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 2	लघुत्तरी प्रश्न।(6 में से 5) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 3	ससंदर्भ व्याख्या। ('आ' विभाग पर) (3 में से 2)	-	10
प्रश्न 4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) ('हैलो कामरेड' नाटक पर)	-	10
प्रश्न- 5	दीर्घोत्तरी प्रश्न ('सूर्य की अन्तिम किरण से पहली किरण तक'नाटक पर)	-	10

चतुर्थ सत्र (Semester - IV)

1.हिंदी नाटक और रंगमंच का संक्षिप्त इतिहास

2.हिंदी नाट्य चिंतन : भारतेंन्दु, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश

नाट्यकृतियाँ : 1) एक डिप्टी कलैक्टर - रूप नारायण सोनार

2) इला - प्रभाकर श्रोत्रिय

3) उजास - रत्नकुमार सांभरिया

प्रश्नपत्र का स्वरुप एवम् अंक विभाजन

प्रश्न- 1	बहुविकल्पी दस प्रश्न (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 2	लघुत्तरी प्रश्न। 6 (में से 5) (पूरे पाठ्यक्रम पर)	-	10
प्रश्न 3	ससंदर्भ व्याख्या । (3 में से 2) ('एक डिप्टी कलैक्टर' नाटक पर)	-	10
प्रश्न 4	दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) ('इला' नाटक पर)	-	10
प्रश्न- 5	दीर्घोत्तरी प्रश्न ('उजास' नाटक पर)	-	10

संदर्भ ग्रंथ

१. हिंदी नाटक और रंगमंच- चंदुलाल दुबे

२. आधुनिक हिंदी-मराठी नाटक- डॉ माधव सोनटक्के

३. समकालिन नाट्य विवेचन-डॉ माधव सोनटक्के

४. हिंदी नाटक रंगशिल्प दर्शन- डॉ विकल गौतम

५. हिंदी नाटक और रंगमंच- राम मलबीर

६. रंग परंपरा- नेमिचंद्र जैन

७. रंगमंच और स्वतंत्रता का आंदोलन- विजय पंडित

८. रंगधर्मी नाटककार शंकरशेष-डॉ. प्रकाश जाधव

९. नाट्य शिल्प- डॉ सुमन राजे

१०. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी रंगमंच - डॉ. ओमप्रकाश शर्मा

११. आधुनिक हिंदी नाटक भाषिक और संवादीय संरचना - गोविंद चातक

१२. 'युध्दरत आम आदमी' के विशेषांक 'सृजन के आइने में, मलमूत्र ढोता भारत' - रमणिका 'फाउंडेशन

१३. हिंदी सिनेमा, टी. वी. और नाटकों में दलित दस्तक - डॉ. सुधीर सागर, लोकमित्र प्रकाशन, शाहदरा ,दिल्ली